आर्योदय

ARYODAYE

Read Aryodaye on line -- www.aryasabhamauritius.mu

Aryodaye No. 318 ARYA SABHA MAURITIUS *26th Sept. to 10th Oct. 2015*

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

वेद ईश्वरीय ज्ञान हैं।

ओ३म् तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽऋथः सामानि जज्ञिरे ।
धन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यष्नुस्तस्माद जायत।।

यजुर्वेद ३१/७ , ऋग्वेद १०/९०/९, अथर्ववेद १९/६/१३

LES VEDAS SONT LES REVELATIONS DIVINES

Om ! Tasmādyagyāt – sarvahutarichaha sāmāni jagyire.
Chhandāmsi jagyire tasmādyajustasmādajāyata.

Yajur Veda 31/7, Rig Veda 10/90/9 , Atharva Veda 19/6/13

Glossaire / Shabdārtha :

Tasmāta - De lui, l'Etre Suprême (Dieu), **Yagyāta** - Adorable,
Sarvahutaha - (i) L'univers – Une manifestation de L'Etre Suprême
(ii) Celui qui nous confère toute son aide, sa protection et sa bénédiction.
Celui à qui nous offrons nos prières, nous confions en toute quiétude nos aspirations, nos appréhensions, nos joies et nos peines, et à qui tout le monde se sacrifie en dévotion absolue.
Richaha - Rig Veda, **Sāmāni** - Sam Veda, **Jagyire** - ont été créés / produits, **Tasmat** - par lui, L'Etre Suprême, **Chhandāmsi** - Atharva Veda, **Yahuja** - Yajur Veda, **Ajāyata** - ont été créés par le Seigneur, et transmis à L'humanité. Il faut être toujours reconnaissant envers lui.

Avant – Propos

Suite à l'interprétation de ce même verset du Yajur Veda parue dans notre bimensuel, Aryodaye, du 1er au 15 Septembre 2015, il y a un aspect important de ce verset qui a été involontairement omis. Nous nous en excusons auprès de nos lecteurs.

Dans cette édition nous nous faisons un devoir de combler cette lacune. Nous espérons que nos lecteurs apprécieront.

En ces quelques lignes suivantes nous présentons à nos lecteurs la version manquante qui complémente le message intégral transmis par ce verset du Yajur Veda. *cont. on pg 3* ***N. Ghoorah***

वैदिक धर्म का धुआँधार प्रचार

डॉ० उदय नारायण गंगू, ओ.एस.के.,आर्य रत्न

अपने स्थापना-काल से अब तक मॉरीशसीय आर्यसमाज ने इस देश में वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में कोई कोर-कसर बाकी नहीं छोड़ी है। इस कार्य में अनगिनत समाज-सेवकों का योगदान रहा है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज के तीसरे नियम में लिखा – *"वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।"* इस नियम को धर्म-पिपासुओं ने शिरोधार्य किया। गत पचास वर्षों से रेडियो के माध्यम से 'वैदिक वाणी' को घर-घर पहुँचाने का पूरा प्रयत्न किया गया है। एक ओर जहाँ वेद-व्याख्यान पर बल दिया गया, वहीं दूसरी ओर पाठकों को वैदिक पुस्तकें पढ़ने की प्रेरणा दी गई। लाखों रुपयों का वैदिक साहित्य पाठकों के हाथों में पहुँचाया गया। इस वर्ष के आरम्भ से अब तक श्री अभयदेव रामरूप ने स्वयं पचास हज़ार से ऊपर की वैदिक पुस्तकें बेची हैं।

जून मास इस देश में 'सत्यार्थप्रकाश मास' से प्रसिद्ध हो गया है और जुलाई-अगस्त वेद-मास से। जून से अब तक स्थानीय एवं भारतीय धर्मोपदेशकों द्वारा वेद-वाणी अखिल मॉरीशस में गूँजती रही है। यह गुंजन न केवल आर्यसमाज के मंच से, वरन् रेडियो-टेलीविजन तथा यज्ञ-महायज्ञों के माध्यम से घर-घर होता रहा है। पिछले तीन महीनों में आठ भारतीय साधु-संन्यासियों ने अपने खर्च पर इस देश में प्रचार-यात्रा करके धर्म-प्रेमियों को अपनी अमृत-वाणी से मन्त्र-मुग्ध किया है। वे हैं – स्वामी विश्वानन्द जी महाराज, स्वामी सूर्यदेव जी, स्वामी आत्मदीक्षिता जी, आचार्य जीतेन्द्र पुरोषार्थी जी, आचार्य धनंजय जी, डॉक्टर जीतेन्द्र चिकारा जी, डॉक्टर विनोद शर्मा जी और ब्रह्मचारी शिवदेव जी।

उपर्युक्त भारतीय धर्मोपदेशकों के प्रवचनों का सभी ज़िलों में आयोजन किया गया। इन विद्वानों ने हज़ारों परिवारों से सम्पर्क किया ।

त्रिओले निवासी श्री आनन्द चमन जी ने

स्वामी विश्वानन्द और डॉक्टर चिकारा जी को अपनी गाड़ी द्वारा प्रचारार्थ सैकड़ों स्थानों पर पहुँचाया। उनकी श्रीमती पंडिता सत्यम् ने दोनों अतिथियों का बड़ी श्रद्धा पूर्वक महीने-भर आतिथ्य किया। आर्य सभा इस श्रद्धालु दम्पति के प्रति आभार प्रकट करती है।

यात्रा की सुविधा को ध्यान में रखते हुए भारतीय धर्म-प्रचारकों को तीन प्रान्तों में रखा गया - उत्तर, दक्षिण और मध्य मॉरीशस में।

भारतीय धर्मोपदेशकों में अब तक सबसे तरुण संन्यासी स्वामी सूर्यदेव जी रहे हैं। उनका संक्षिप्त परिचय निम्न प्रकार है –

कृषक परिवार में जन्मे **स्वामी सूर्यदेव** ने दिल्ली विश्वविद्यालय से *बी०एस०सी०* (कैमिकल्स) की उपाधि प्राप्त की। आपने मानवाधिकार में स्नातकोत्तर उपाधि और *एम०फिल०* उपाधि प्राप्त की। आपकी योग, प्राकृतिक चिकित्सा और आध्यात्मिक उपदेश करने में विशेष रुचि है। बचपन से ही आप पारिवारिक संस्कारों के कारण और स्वामी दयानन्द जी के चरित्र और उपदेशों के प्रभाव में रहे और आपने बीदृएसदृसीदृ की परीक्षा समाप्त करने के बाद छोटी आयु में ही संन्यास ले लिया। आप भारतवर्ष और विदेशों में बहुत जगह प्रचार-प्रसार करते रहे हैं। अंत में आपने पंजाब को अपने आध्यात्मिक और सामाजिक उन्नति के कार्यों के लिए चुना है।

स्वामी सूर्यदेव जी को पंजाब और उत्तर भारत में एक आध्यात्मिक विभूति के रूप में अत्यंत आदर दिया जाता है। आप अनेक विद्यालयों और महाविद्यालयों में जाकर आध्यात्मिक उपदेश करते हैं और महर्षि दयानंद का संदेश जन-जन तक पहुँचाते हैं। आपके मार्गदर्शन में सामूहिक विवाह का आयोजन किया जाता है, जिससे गरीब परिवारों की कन्याओं को जीवन जीने का अवसर प्राप्त होता है।

शेष भाग पृष्ठ २ पर

सम्पादकीय

आत्म-ज्ञान

जीवात्मा और परमात्मा के विषय में जानकारी प्राप्त करने को 'आत्म-ज्ञान' कहते हैं। बिना आत्म-ज्ञान के हमारा जीवन व्यर्थ है। हर एक व्यक्ति को अपने मूलस्वरूप आत्मा के बारे में जानने की आवश्यकता है। मनुष्य जीवन में हमें सत्यज्ञान, आत्मबोध और परमात्म-बोध प्राप्त करने का अवसर मिलता है।

*उपनिषदें कहती हैं :- **'आत्मानं विद्धि'** अर्थात् शरीर के साथ-साथ आत्मा को भी जानो। बिना आत्म-ज्ञान के हमारा जीवन अधूरा और नीरस है। आत्मा को प्रभु के सान्निध्य में जो सुख-शान्ति, सन्तोष, प्रसन्नता तथा अपार आनन्द प्राप्त होगा, वह सुखभोग और विषय-वासनाओं आदि से प्राप्त नहीं हो सकता है।*

आज संसारी व्यक्ति आनन्द को सांसारिक चीज़ों में ढूँढ़ रहा है, जो उसकी बड़ी भूल और अज्ञानता है। सच्चा आनन्द तो परमेश्वर की समीपता में है। भौतिक भोगों में सच्चा आनन्द नहीं। सच्चा आनन्द तो अन्दर है, हम उसे बाहर खोज रहे हैं। इन्द्रियों के क्षणिक सुखों को हम आनन्द समझ रहे हैं, इस भूल के कारण सारी दुनिया भ्रम तथा अज्ञानता में भटक रही है। मनुष्य को सदा इस बात का ख्याल रखना चाहिए कि आनंद तो केवल परमेश्वर के पास है। प्रभु की सच्ची भक्ति, साधना, प्रार्थना, स्तुति और उपासना ही से सच्चा आनन्द प्राप्त होता है।

आज संसार के बन्धन में फँसे लोग अपने शरीर से अधिक प्यार करते हैं। वे यह भूल जाते हैं कि यह शरीर तो नश्वर है। एक दिन इसका नाश होने वाला है, अज्ञानता वश आज लोग अपनी आत्मा से उतना प्यार नहीं करते हैं। वे यह भूल गये हैं कि आत्मा के संयोग से ही शरीर में चेतना आती है। पवित्रता आती है। इन्सान को आत्मा की सत्ता का बोध तब होता है, जब मृत शरीर भूमि पर पड़ा रहता है, उसे जलाने की शीघ्रता होती है, क्योंकि उससे दुर्गन्ध आने लगती है। इसका तात्पर्य यह है कि शरीर का आधार आत्मा है। जब आत्मा परमात्मा के अनुशासन में कार्य करे और बुद्धि आत्मा के अनुकूल कार्य करे, तभी जीवन श्रेष्ठ और पवित्र बनता है।

आत्मा परमात्मा का चेतन मंदिर हैं। शरीर से कीमती और इस शरीर को धारण करने वाली आत्मा ही है; जब तक आत्मा शरीर से जुड़ी हुई है, तब तक जीवन है, इसीलिए शरीर में जीवात्मा के रहने के समय को आयु कहते हैं। अतः मनुष्य शरीर पालने से हम धन्य नहीं हो सकते हैं। हमें तो यह शरीर सीमित समय के लिए मिला है। मृत्यु तो हमारे पीछे लगी है। पता नहीं कब हम कालचक्र में फँस सकते हैं। इसीलिए हर दिन को आखिरी दिन मानकर जीना चाहिए।

हमारा शरीर तो एक सुन्दर और सुगन्धित बगीचा है। इसी जीवन में हमें अपने को उठाना है और सुधारना है। हमें अपने उत्तर दायित्व या कर्त्तव्यों को बड़ी सच्चाई तथा ईमानदारी के साथ निभाना है। अपने जीवन के लक्ष्य को बढ़ाते रहना है, तभी मानव जन्म सार्थक होगा।

समझदारी इसी में है कि आत्मज्ञान प्राप्त करके बड़ी प्रसन्नता के साथ हर हालत में जीवन व्यतीत किया जाए। यदि एक व्यक्ति के पास जीने का ढंग और विचारों की पूँजी है तो उसका जीवन-काल अवश्य ही मंगलमय होगा।

परमात्मा की ऐसी कृपा हो कि हमें सत्य ज्ञान, सद्बुद्धि और सद्विचार प्राप्त हो क्योंकि हमारे जीवन की सार्थकता इन्हीं सम्पदाओं पर आधारित है।

बालचन्द तानाकूर

पृष्ठ १ का शेष भाग

Swami Suryadev is a respected religious personality in Northern India including the Punjab. He saw the light of day in a middle class but greatly respected family of agriculture who had a deep sense of Hindu traditions, and were deeply influenced by the teachings of Swami Dayananda Saraswati. With such a background, Swami Suryadev felt strongly inclined towards 'Sannyas'.

After completing his Bsc, in Chemicals from the University of Delhi, Swami Suryadev embraced Sannyasa at that tender age. However, he was destined to leave his mark both in and outside India thanks to his spiritual commitment. He holds a post graduate degree in Human rights and has completed his M.Phil. as well. These academic qualifications have added more lustre to his charisma as practising and living saint.

Swami ji is currently involved actively in social and spiritual services of the masses due to his preachings based on Vedic wisdom which do not leave the people indifferent.

During his flying visit to Mauritius, he travelled to several places preaching Vedic tenets. He won the hearts of the listeners by the intellect he displayed his melodious voice and scientific thoughts.

Those who have met him speak of him in laudable terms as a loving personality who has made a strong impression on them.

सामाजिक गतिविधियाँ

श्रावणी यज्ञ का समापन सुयाक सब-सेन्टर में

सत्यदेव प्रीतम, सी.एस.के., आर्य रत्न

इस वर्ष श्रावणी यज्ञ की स्वर्ण जयन्ती मनाने हेतु हमने आर्य भवन पोर लुई में पहली अगस्त २०१५ को बहुकुण्डीय यज्ञ का आयोजन किया था। उसकी पूर्णाहुति

रविवार दि० २०.९.१५ को सुयाक में सम्पन्न की गयी। कार्यक्रम यज्ञ से प्रारम्भ हुआ था। यज्ञ ब्रह्मा पुरोहित मण्डल के अध्यक्ष पं० ऊमा जी के साथ प्रान्तीय स्तर के अनेक पुरोहित-पुरोहिताएँ सक्रिय रूप से सहयोग प्रदान कर रहे थे। सभी पुरोहितों ने एक स्वर से वेद-मंत्रों का उच्चारण किया जो देखने-सुनने में बहुत अच्छा लग रहा था।

मौके के मुख्य अतिथि राष्ट्रीय सभा की अध्यक्षा श्रीमती माननीया शान्तिबाई माया हनुमान जी जी.सी.एस.के. थीं। उनके साथ सांसद मणीश गोबिन जो उस इलाके के सांसद (Deputy) विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

उस महान् मौके पर आर्य सभा मोरिशस के लगभग सभी अन्तरंग सदस्य उपस्थित थे।

कहा जाता है कि अच्छे काम करने के बाद सदस्यगण गीत एवं भजन गाते हैं। जबकि चोरी करने के बाद दिल में डर समाया हुआ होता है और गीत नहीं गाते हैं। बारी बारी से श्रीमती तपस्या शर्मा बितूला ने अपने सगी-साथियों को लेकर एक मधुर गाना गाया जिसे सुनकर श्रोतागण गदगद् एवं प्रसन्न चित्त हो गये। लोगों को मनोरंजन के लिए सावान प्रान्त के प्रसिद्ध भजनिक श्री देवचन्द बिसम्बर जी ने अपने भजन से लोगों को पुलकित कर दिया और युवा गायक हिमेश गुरप्पा ने लोगों को सामूहिक रूप से गुरुमंत्र का जाप करवाया और तत्काल बाद, 'एक मधुर भजन गाया जिसका शीर्षक था'। *'ओ३म्, ओ३म्, ओ३म् मेरा बोले रोम रोम.....'*। अन्तिम अंतरा गाते हुए सभी लोगों को सम्मिलित कर दिया। उसी दौरान प्रान्त के युवक समिति के प्रधान युवक सर्वानन्द नौलोटा ने एक स्वरचित कविता पाठ करके सभी लोगों की वाहवाही लूट ली।

यज्ञ के बाद जब कार्यक्रम का दूसरा हिस्सा शुरू हुआ तो सावान ज़िला परिषद् के अध्यक्ष भाई राजेन्द्र प्रसाद रामजी ने सभी लोगों का स्वागत बहुत ही नपे तुले शब्दों में किया। और बताया कि सावान में लगभग १,००० यज्ञ हुए होंगे जिनसे प्रदूषण दूर हुआ और वातावरण शुद्ध और स्वच्छ हो गया ।

संसद की अध्यक्षा श्रीमती शान्ति बाई हनुमान जी ने अपने सारगर्भित भाषण में आर्यसमाज द्वारा किये गये कार्यों का स्तुतिगान किया। उन्होंने आगे कहा कि आज आर्य सभा के प्रचार कार्य से प्रभावित होकर आज तीन महिलाएँ शीर्ष स्थान पर पहुँची हुई हैं। वे हैं खुद आप ही और गणतंत्र की राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति ।

आर्यसभा के प्रधान डा० गंगू का वेद मंत्र की व्याख्या की ।

अन्त में सभा के उपप्रधान सत्यदेव प्रीतम ने सभी लोगों को धन्यवाद करते हुए माँग की कि सभी लोग भोजन करके ही जाएं।

कार्य का संचालन सभा के महामंत्री रामधनी ने बखूबी किया।

पुस्तक विमोचन 'मोहनलाल मोहित - एक जीवनी'

२२ सितम्बर २०१५ को सायंकाल ४.०० बजे स्व० श्री मोहनलाल मोहित के ११३ वाँ जन्म दिवस मनाने के लिए हमालावेनिर आर्य मंदिर में

बहुसंख्या में जुटे हुए थे। यज्ञ एवं भजन कीर्तन के पश्चात् समारोह का उद्घाटन करते हुए अपने लघु स्वागत भाषण में महर्षि दयानन्द इस्चिच्यूट (Institute) के प्रधान श्री सत्यदेव प्रीतम ने कहा कि पिछले ५-६ वर्षों में हमने यह पाँचवी पुस्तक प्रकाशित की जिसका शीर्षक है 'मोहनलाल मोहित– एक जीवनी'। पहले भी पुस्तक-पुस्तिकाएँ प्रकाशित हो चुकी है पर किसी का भी लोकार्पण नहीं हुआ। महर्षि दयानन्द संस्थान के अनेक उद्देश्यों में से मुख्य उद्देश्य है फ्रांसीसी ज़ुबान में वैदिक साहित्य का अनुवाद और प्रकाशन एवं वितरण।

पुस्तक लेखक और कोई नहीं – श्री नरेन्द्र घूरा जी हैं जो दिवंगत आत्मा मोहित जी का जमाई होने के नाते उनको बहुत करीब से देखा और उन के विचारों को पढ़ा और समझा है ।

प्रश्न उठता है कि फ्रांसीसी भाषा में क्यों ? उत्तर में हम कहेंगे कि अंग्रेज़ी और हिन्दी में प्रचुर मात्रा में सामग्री है पर फ्रांसीसी भाषा में इनेगिने लोगों ने लिखा है जब कि फ्रेंच भाषा बोलने वाले, लिखने वाले और समझने वाले सब से अधिक हैं।

निकट भविष्य में महर्षि दयानन्द की जीवन भी प्रकाश में आ रही है। इसके अलावा वेद मंत्रों को भी प्रकाशीत करेंगे। खुशी की बात है कि २० सितम्बर महीने में फ्रांसीसियों की मौजूदगी के तीन सौ साल हो रहे हैं और सितम्बर में ही मोहित जी का जन्म हुआ था और पुस्तक विमोचन भी सितम्बर में ही हुआ।

समारोह के मुख्य अतिथि थे प्रो० जगेसर जी और विशिष्ट अतिथि श्रीमती नूतन पाण्डे भारतीय उच्चायुक्त की द्वितीय सचिव थीं। समारोह में हमारे कई अन्तरंग सदस्य भी उपस्थित थे जिनमें डा० जयचन्द लालबिहारी थे।

भाषण दाताओं में थे डा० उदयनारायण गंगू और प्रो० जगेसर जी और श्रीमती नूतन पाण्डे।

त्रिओले श्रावणी यज्ञ का स्वर्ण जयन्ती समारोह

सर्वप्रथम स्वामी अखिलानन्द जी ने त्रिओले में श्रावणी यज्ञ किया था।

त्रिओले में पहला श्रावणी यज्ञ

हितलाल मोधू

श्रावणी यज्ञ के जन्मदाता स्व० स्वामी अखिलानन्द जी

सर्वप्रथम स्व० स्वामी अखिलानन्द जी ने त्रिओले तीन बुतिक आर्यसमाज के प्रधान स्व० श्री ब्रम्हदत नन्दलाल जी के सहयोग से साल १९६५ में त्रिओले में उनके निवास स्थान पर बुधवार ११ अगस्त १९६५ से रविवार १५ अगस्त १९६५ तक पाँच दिनों का श्रावणी यज्ञ किया था। वेद पाठी पं० रामलगन रामरूप जी और पं० बृज मधु जी थे। अन्तिम दिन सहभोज हुआ था। मोरिशस में यह श्रावणी यज्ञ की शुरुआत थी।

त्रिओले तीन बुतिक आर्य मन्दिर में श्रावणी यज्ञ का स्वर्ण जयन्ती समारोह १९६६-२०१५

साल १९६६ में त्रिओले तीन बुतिक आर्यसमाज के नवनिर्मित आर्य मन्दिर के उद्घाटन के पावन अवसर पर ३० अगस्त १९६६ से ४ सितम्बर १९६६ तक छः दिवसीय यजुर्वेद परायण श्रावणी महायज्ञ हुआ था। वेद पाठ करने वाले स्व० पंडित रामलगन रामरूप जी थे और व्याख्यानदाता स्व० पं० शिवदत्त विद्यावाचस्पति, पं० वेणीमाधो सतिराम, पंडिता द्रौपदी माताबदल और श्री दीपनारायण बिगन शास्त्री एम.ए. थे। त्रिओले तीन बुतिक आर्यसमाज मन्दिर में यह पहला श्रावणी यज्ञ था।

एक महीने का श्रावणी यज्ञ

साल १९६७ में त्रिओले तीन बुतिक आर्यसमाज के प्रधान स्व० श्री ब्रम्हदत्त नन्दलाल जी ने अपने आँगन में विशाल पण्डाल बनवाकर २१ अगस्त १९६७ से २१ सितम्बर १९६७ तक पूरे एक महीने तक स्व० स्वामी अखिलानन्द जी के कर कमलों से ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद चारों वेदों का पारायण महायज्ञ करवाया था। उन दिनों स्वामी अखिलानन्द जी भारत लौट चुके थे। इस कार्य के लिए स्व० श्री ब्रम्हदत्त नन्दलाल जी ने अपने खर्च से स्वामी अखिलानन्द जी को भारत से बुला कर इस कार्य को सम्पन्न किया था। अन्तिम दिन रविवार २१ अगस्त १९६७ को नगर कीर्तन भी हुआ था जिसमें त्रिओले के अतिरिक्त अन्य गाँवों और शहरों से भी श्रद्धालु धर्म प्रेमी जन नगर कीर्तन में भाग लेने के लिए आए हुए थे।

साल १९६८ में पुनः त्रिओले तीन बुतिक आर्य मन्दिर में पाँच दिवसीय श्रावणी महायज्ञ हुआ था। इस प्रकार हर साल त्रिओले तीन बुतिक आर्य मन्दिर में श्रावणी यज्ञ आयोजन करने की परम्परा चल पड़ी। हर साल श्रावणी महोत्सव मनाते-मनाते आज हम २०१५ तक आ पहुँचे हैं।

अति खुशी की बात है कि श्रावणी महायज्ञ की स्वर्ण जयन्ती के पावन अवसर पर इस साल हम लोगों ने १२ अगस्त से १६ अगस्त २०१५ तक बड़े ही उत्साह एवं धूम-धाम के साथ भारी सफलता के साथ श्रावणी महायज्ञ की स्वर्ण जयन्ती मनाई। पाँच दिनों के कार्यक्रम को बड़े ही आकर्षक ढंग से सजाया गया था। श्रावणी महायज्ञ की स्वर्ण जयन्ती समारोह में सम्मिलित होने के लिए त्रिओले के अतिरिक्त पाम्प्लेमूस, ग्राँबे, प्वेंत ओ पीमाँ, मोका, फोंजीसाक, मोर्सेल्माँ, वाले दे प्रेत, त्रुओ बीश, गुडलैंस, मोंताई लोंग, रिव्येर जी रॉपार, देपीने, पेरेबेर, पुएंत ओ कानोनियें, आमोरी, युनियन वेल, रोज़हिल, वाकुआ..... आदि आदि गाँवों और शहरों से त्रिओले तीन बुतिक आर्यसमाज के शुभ चिन्तक धर्म प्रेमी श्रद्धालु जन बड़ी श्रद्धा और उत्साह के साथ इस स्वर्ण जयन्ती समारोह में भाग लेने के लिए आये हुए थे।

बुधवार १२ अगस्त २०१५

आर्य सभा के प्रधान डा० उदयनारायण गंगू जी की अध्यक्षता में ध्वजोत्तोलन के बाद प्रथम दिन का श्रावणी यज्ञ सम्पन्न हुआ। भजन-कीर्तन के बाद स्थानीय प्रधान श्री हितलाल मोधू जी का औपचारिक स्वागत भाषण हुआ। समाज के मन्त्री श्री रोशनप्रकाश हरनोम जी की प्रस्तुती में भारत से पधारे हुए स्वामी विश्वानन्द जी, डा० उदयनारायण गंगू जी तथा डा० जितेन्द्र चिकारा जी के कर कमलों से श्रावणी की स्वर्ण जयन्ती स्मृति पट का अनावरण हुआ। फिर त्रिओले तीन बुतिक आर्यसमाज की ओर से लगाई गई प्रदर्शनी का उद्घाटन तीनों महानुभावों के कर कमलों से हुआ। तुरन्त बाद स्वामी विश्वानन्द जी, डा० उदयनारायण गंगू जी तथा डा० जितन्द्र चिकारा जी के कर कमलों से त्रिओले तीन बुतिक आर्यसमाज और आर्य सभा के मिले-जुले सहयोग से प्रकाशित शताब्दी दस्तावेज़ पुस्तिका का लोकार्पन हुआ। तुरन्त आर्यसभा के प्रधान डा० उदयनारायण गंगू जी का संदेश एवं भाषण हुआ। तत्पश्चात् स्वामी विश्वानन्द जी का एक बढ़िया प्रवचन हुआ। अन्त में संध्या एवं शान्ति पाठ के बाद प्रसाद से सब लोगों का सत्कार हुआ ।

गुरुवार १३ अगस्त २०१५

दिन के पौने एक बजे से मन्त्री श्री रोशनप्रकाश हरनोम जी की प्रस्तुती में बाल सम्मेलन सम्पन्न हुआ। तीन बजे से श्रावणी यज्ञ आरम्भ हुआ। यज्ञ के पश्चात् स्थानीय प्रधान जी द्वारा लोगों का स्वागत हुआ। आज प्रवचन का कार्यक्रम नहीं था। मध्य में आर्यसभा के उपदेशक आचार्य पं० धर्मेन्द्र रिकाई जी आर्य भूषण उपस्थित थे, हमारी माँग पर आचार्य जी ने यज्ञ के महत्व पर चन्द शब्दों में अपना संदेश सुनाया। इसके बाद हारमोनियम, सितार एवं साज संगीत के साथ भजन-कीर्तन का विशेष कार्यक्रम आरम्भ हुआ। संगीत प्रेमी श्री धर्मानन्द रामनोथ जी तथा त्रिओले तीन बुतिक आर्यसमाज की भजन मण्डली, श्री राज कोटक जी, श्रीमती राखी कोटक और पंडिता बिन्ता जाहाल जी ने अपनी अपनी मधुर आवाज़ों में वारी वारी से कई सुन्दर सुन्दर भजन प्रस्तुत किये जिसे सुनकर लोग मुग्ध हो गये। संगीत का कार्यक्रम बहुत बढ़िया चला। लोगों ने कार्यक्रम की भूरी-भूरी प्रशंसा की। संध्या और आरती गान के बाद प्रसाद से सब लोगों का मुँह मीठा किया गया।

शुक्रवार १४ अगस्त २०१५

आर्यसभा के उप० मन्त्री डा० जयचन्द लालबिहारी जी की अध्यक्षता में तीसरे दिन का श्रावणी यज्ञ सम्पन्न हुआ। प्रतिदिन मन्त्री श्री रोशनप्रकाश हरनोम जी कार्यक्रम प्रस्तुत कर रहे थे। स्थानीय प्रधान जी के स्वागत के बाद डा० जयचन्द लालबिहारी जी का एक शिक्षाप्रद भाषण हुआ। लोगों ने कार्यक्रम की भूरी भूरी प्रशंसा की। संध्या और आरती गान के बाद प्रसाद वितरण के साथ तीसरे दिन का कार्यक्रम पूरा हुआ।

शनिवार १५ अगस्त २०१५

पौने एक बजे से पंडिता पार्वती लछुमन जी की अध्यक्षता में आर्य महिला सम्मेलन सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। दोनों सम्मेलनों में चाय और मिठाई से लोगों का सत्कार किया गया। आर्य सभा के महामन्त्री श्री हरिदेव रामधनी जी आर्य रत्न की अध्यक्षता में चौथे दिन का श्रावणी यज्ञ सम्पन्न हुआ। प्रधान जी के स्वागत के पश्चात् महामन्त्री श्री हरिदेव रामधनी जी ने अपना संदेश सुनाया। तत्पश्चात् भारत से पधारे हुए आचार्य जितेन्द्र पुरुषार्थी जी का सारगर्भित प्रवचन हुआ। इसके बाद डा० जितेन्द्र चिकारा जी ने अपना संदेश सुनाया। कार्यक्रम के अन्त में संध्या के बाद प्रसाद वितरण हुआ।

शेष भाग पृष्ठ ३ पर

मोका आर्य ज़िला परिषद् द्वारा श्रावणी महोत्सव की पूर्णाहुति

पंडित सत्यानन्द फाकू

पिछले शनिवार ता० ५ सितम्बर २०१५ को काँतोरेल आर्य मन्दिर में मोका आर्य ज़िला परिषद् द्वारा, अगस्त में श्रावणी महोत्सव के अवसर पर किये गये महायज्ञों की पूर्णाहुति समारोह पूर्वक सम्पन्न हुई। सायंकाल साढ़े तीन बजे से यज्ञ प्रारम्भ हुआ, जिसमें मोका के वरिष्ठ पुरोहित पं० सत्यानन्द फाकू जी, पंडिता राजवंश सालिक जी और पंडिता सविता तोकोरी जी ने यज्ञ सम्पन्न किया। यजुर्वेद के चालीसवाँ अध्याय गायत्री मन्त्र के साथ पढ़ा गया।

इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि शिक्षा मन्त्री माननीय श्रीमती लीलादेवी दुखन लछुमन जी के साथ युवा एवं क्रीड़ा मन्त्री, माननीय योगिदा सॉमिनादेन जी, माननीय महेन झग्रू जी, सरकारी चीफ़ वीप और माननीय प्रवीण जगन्नाथ जी उपस्थित थे। उनका स्वागत एक-एक शिल्ड से किया गया, जब कि आचार्य जितेन्द्र पुरुषार्थी और आचार्य डॉ० विनोद कुमार शर्मा जी का स्वागत एक-एक शाल से किया गया।

काँतोरेल आर्यसमाज के प्रधान श्री हंसराज मंगर जी ने सभी का स्वागत करते हुए इस महीने के कार्यक्रमों का विस्तार पूर्वक वर्णन किया।

मोका आर्य ज़िला परिषद् के प्रधान तथा वेद प्रचार समिति के प्रधान श्री बालचन्द तानाकूर जी ने इस आयोजन और सहयोग के लिए काँतोरेल आर्यसमाज के सदस्यों को धन्यवाद देते हुए कहा कि घर-घर में भी श्रावणी यज्ञ तथा पारिवारिक सत्संगों का आयोजन करना चाहिए। लावेनिर में साठ परिवारों के घरों में श्रावणी यज्ञ चला।

आचार्य जितेन्द्र पुरुषार्थी जी ने कृष्ण जन्माष्टमी पर बोलते हुए कहा – लोगों ने श्री कृष्ण जी को माखन-चोर बना दिया है। गोपिकाओं के चिर-हरण करने वाला बताया है। जब कि वे एक आर्य पुरुष थे, उन्होंने गीता के उपदेश में वेद की ही बातें कही है।

आचार्य डॉक्टर विनोद शर्मा जी ने कृष्ण के गोपालक की बात बतायी। गो सेवा करने से हमें बहुत लाभ होते हैं। गाय के गोबर, उसके बने खाद से अपने खेतों को ज्यादा उपजाऊ बना सकते हैं। मैं सभी खेतिहरों के साथ बैठकर इसके फायदे पर बात करना चाहता हूँ।

अन्त में आर्य सभा के प्रधान डॉ० उदयनारायण गंगू जी ने भी श्री कृष्ण जी पर चर्चा करते हुए उनके गुणों की बातें बतायीं। हमने उनकी अच्छाइयों की जगह पर बुराई ही देखी, जबकि वे पुरुषोत्तम कहलाते हैं।

इस बीच दो भजन भी प्रस्तुत किये गये। पुरोहिताओं और काँतोरेल आर्य महिला समाज की सदस्याओं द्वारा भजन प्रस्तुत किये गए।

तन, मन, धन से सहयोग देने वाले सभी को पंडित सत्यानन्द फाकू जी ने धन्यवाद दिया। आचार्य विनोद शर्मा जी के प्रभावशाली भाषण सुनकर उन्होंने कहा कि आचार्य जी के स्वदेश लौटने से पूर्व पुनः एक बार इस समाज में उनका प्रवचन सुनने का मौका मिलेगा।

कार्यक्रम का संचालन मोका आर्य ज़िला परिषद् के मन्त्री श्री र. शिवपाल जी कर रहे थे।

SHRAWANI UPAKARMA 2015

Pt. Jaychand Aukhojee

The above named celebrations officially started on the 31st July 2015 and ended on the 28th August. It is still continuing in some other places. All these celebrations were held under the aegis of Arya Sabha Mauritius in almost all its affiliated branches with great enthusiasm and success. The audience everywhere showed great interest.

The Arya Sabha Mauritius has proclaimed the July-August month as Veda Month, i.e a month of solid attention on Vedic learning. The Purnima (full moon) of the 31st July was known as Guru Purnima. Guru means Vedic Teachers and Educators i.e Rishis, Munis, Swamis (Ascetic Sages) Pundits and Acharyas. It is a time of Guru Darshan (meeting with and dedication to Guru). In India during this month, owing to the inclement weather the Gurus abandon their simple ordinary cottages to shelter themselves in the hermitages and residences of the Grihastis of the villages and towns. During their stay they teach the Vedic Education for dissemination of Vedic Values. People learn from them recitation of Vedic Verses, performance of rituals, Yajnas, Sandhya, Satsang and chanting Vedic Hymns. Hence, it is a sort of enhancement for purification and improvement of human values and societies. The atmosphere and environment change and become very perfect.

As for my part, I was assigned to perform the celebrations in four affiliated branches of Arya Sabha Mauritius. In addition, I performed about 10 others at some other families' places. Two of these families had spent a lot in the organisations – Doorgah Family of Valton Long Mountain and the Bhoyroo family of Ville Bague. The three Doorgah brothers namely Tameshar, Dillip and Abhaydawe and Shri Satyanand Bhoyroo and Mrs Bhoyroo showed very great devotion and enthusiasm. The attendances were not less than 200. In the four affiliated branches, the minimum attendance was 50. The two private families had erected tents with great decorations and served lunch to the audience. All the young children, secondary and students, graduates, parents of these families can perform Yajna, Sandhya and Bhajan. They can read the Vedic Mantras easily. In the affiliated branches I had the assistance of Pts. and Ptas. D. Chintamunee, D. Pokhraz, L. Mungroo and Pt. T. Poonye, Dr. J. Lallbeeharry, Shri Shekhar Ramdhuny, Shri G. Teeluck and Pt. M. Boodhoo ji added more fragrance by their valuable presence and messages. In the two private families, I had Pta. D. Chintamunee together at Valton, and at Ville Bague I was alone.

As matters concerning messages, many verses were explained. I am reproducing here only two of them:--

Yajuveda Chapter 25 No.21 -- Bhadram Karnēbhih srrinuyām dēvā bhadram pasyēmāksha bhiryajatrāh sthirairangai, stustuvām sastanu bhirvya sēmahi dēvāhitam yadāyuh

Explanation:- **Bhadram** - excellent, auspicious, **Karnebhih**-with ears, **Srrinuyam** - hear, listen, **Deva** - learned scholars sages, **Pashyema** – see, **Akshabhi** - with eyes, **Yajatra** – worth following, **sthir** – firm, healthy, **Agnaye** – organs of the body, **Tushtuvamsa** – worshipping or praying, **Tanubhi** – with this body, **Vyashimahi** – obtain, achieve rightly, **Devahitam** – bliss of sages, **Yadayuh** – this lifetime.

People who always seek the company of learned scholars or sages always learn to see and hear good things, worship and pray the Almighty and achieve spirituality and a blissful life.

Chapter 30 No.1 – Deva Savitah Prasuva yajnam Prasuva yajnapatim bhagaya Divyo Gandharvah ketapuh keta naha Punatuvachaspatira Vacham naha Swadatu.

Explanation:- **Deva** - God, **Savitaha** - Creator, **Prasuva** - created, **Yajyam** - rituals, **Yajnpatim** - ruler or protector of rituals, **Bhagaya** – happiness and harmony, **Divyo** - devine, powerful, **Gandharva** - holder and sustainer of this world, **Ketapu** - perfectioner, **Ketam** – mind, **Naha** - our, **Vachaspati** – protector of speech, **Vacham** - speech, **Swadatu** - sweet to hear.

Oh – the almighty God, you are the creator, holder and sustainer of this world. You have prescribed the Vedic rituals and sages teach these rituals in order to purify people's mind and speech so that spiritual happiness and harmony can always prevail.

cont. from pg 1

Om ! Tasmādyagyāt – sarvahutarichaha sāmāni jagyire. Chhandāmsi jagyire tasmādyajustasmādajāyata.

Yajur Veda 31/7, Rig Veda 10/90/9 , Atharva Veda 19/6/13

Interprétation / Anushilan

L'auteur de tous les quatre Vedas n'est pas l'homme, mais Dieu, lui-même. Ces livres sacrés (les Vedas) ne sont pas l'œuvre de l'homme. Ils sont les Révélations Divines.

Le fait que ce verset se trouve aussi dans deux autres Vedas – Le Rig Veda et L'Atharva Veda – est une preuve authentique qui confirme la Paternité Divine des Vedas.

Toute modification des Vedas, par insertion ou omission des mots, des expressions ou des phrases, est impossible. C'est parce que la structure des Vedas est très originale (unique en son genre), parfaite et irrévocable (définitif, impossible de changer) et ne tolère aucune interférence ou modification.

Dès la création du monde, les quatre Vedas furent transmis à l'humanité par l'Etre Suprême aux quatre sages suivants : Agni, Vāyu, Aditya, et Angira. A leur tour ils les transmirent au sage Brahma et autres.

Les textes des Vedas ont été composés avec une telle précision que nul homme, quelqu'érudit soit-il en Sanskrit, ne pourra ni ajouter ni modifier une seule syllabe. Si quelqu'un arrive à le faire, l'équilibre rythmique du verset védique va se déstabiliser et l'auteur de cet acte sera pris sur place.

Voilà pourquoi après tant de milliers d'années les Vedas conservent leur pureté originale. Personne n'a osé apporter la moindre modification à leur authenticité.

पं० देवकिनन्दन गोबिन जी न रहे

एस. प्रीतम

पं० देवकिनन्दन गोबिन जी का देहावसान गत रविवार ६ सितम्बर को

सायंकाल लगभग ७.०० बजे ९३ वर्ष की आयु में हुआ। देहान्त का शोक समाचार वन की आग के समान फैलने लगा और देखते-देखते परिवार के सदस्य एवं जान पहचान वाले आने लगे।

पंडित जी ने ५० साल तक आर्य समाज की सेवा की। बिरले ही कोई पंडित होता है जिसकी धरम पत्नी भी पंडिता या पुरोहिता होती हैं।

पंडित गोबिन जी एक सफल वक्ता थे; वे अध्ययनशील थे और उनका सब से बड़ा गुण था परिश्रम – वे परिश्रम करके अपनी पाँचों संतानों को पढ़ाया-लिखाया और जीवन में सफल बनाया। आज उनके कनिष्ठ पुत्र अजय गोबिन हमारे डी.ए.वी. कोलिज मोर्सेल्माँ सेंतान्द्रे के रेक्टर पद पर काम कर रहे हैं।

पंडित गोबिन जी पंच महायज्ञ के भक्त थे। वे अपने गृह पर केवल यज्ञ नहीं करते बल्कि परायण महायज्ञ भी कितनी बार सम्पन्न किये। उनके यहाँ भारत से आने वाले संन्यासियों, आचार्यों और विद्वानों का आगमन होता रहता था। स्व० स्वामी दिव्यानन्द जी महाराज तो उनके यहाँ रहते भी थे।

पंडित जी विदेश यात्रा कई बार की। भारत की यात्रा चार बार की - सन् १९७५, १९८२, सन् १९९२ और सन् २००१ में ।

सन् १९७८ ई० में स्वामी दिव्यानन्द के साथ किन्या की राजधानी नैरोबी में त्रिदिवसीय महायज्ञ में भाग लिया था। सब तो सब सन् २००१ की यात्रा के दौरान भारत में एक विवाह संस्कार सम्पन्न किया था।

पंडित जी तो चले गए पर उनकी याद रह गई। हर ७ सितम्बर को उनको खास कर मैं याद करूँगा क्योंकि उनकी अन्त्येष्टि-क्रिया में भाग लेने के बाद मैं भारत के लिए रवाना हुआ था। भारत के मध्य प्रदेश राज्य की राजधानी भोपाल में अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन में भाग लेना था।

पृष्ठ २ का शेष भाग

रविवार १६ अगस्त २०१५

सुबह नौ बजे से आर्य सभा के उप प्रधान श्री सत्यदेव प्रीतम जी आर्य रत्न की अध्यक्षता में श्रावणी यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। एम.बी.सी., टी.वी. वाले आये थे घूम-घूम कर दृष्यों को फ़िल्मा रहे थे। भजन-कीर्तन के बाद अपने स्वागत भाषण के अन्तर्गत समाज के प्रधान श्री हितलाल मोधू जी ने बताया कि आज से पचास साल पहले स्वामी अखिलानन्द जी ने त्रिओले तीन बुतिक में श्रावणी यज्ञ की शुरुआत की थी। १९६६ से त्रिओले तीन बुतिक आर्य मन्दिर के उद्घाटन के समय से लेकर हर साल हम श्रावणी यज्ञ का आयोजन करते करते २०१५ तक आ पहुँचे हैं। इस साल हम लोग श्रावणी यज्ञ की स्वर्ण जयन्ती समारोह मना रहे हैं। तत्पश्चात् श्री सत्यदेव प्रीतम जी ने अपना संदेश सुनाया। तुरन्त त्रिओले तीन बुतिक आर्यसमाज की ओर से आर्यसभा के उपप्रधान श्री सत्यदेव प्रीतम जी ने श्री जगरनाथ जी के सम्मान में उनके महत्वपूर्ण विकास कार्य के लिए उनको श्री भरत मोधू आवार्ड का एक शिल्ड प्रदान किये। साथ-साथ श्रीमती पदमावती जगरनाथ जी को भी एक फूलों की गुच्छा से सम्मानित किया गया। अन्त में श्री हितलाल मोधू जी ने सहयोग के लिए सब लोगों को धन्यवाद दिये। सहभोज के साथ इस साल का पाँच दिवसीय श्रावणी स्वर्ण जयन्ती समारोह अभूतपूर्व सफ़लता के साथ पूरा हुआ।

The President and Members
Souillac Arya Samaj & Arya Mahila Samaj
under the aegis of
ARYA SABHA MAURITIUS
in collaboration with
Savanne Arya Zila Parishad
cordially invite you along with your family, friends and Samaj members to attend the
GOMEDH YAGYA IN THE MEMORY OF GURU VIRJANAND DANDEE JI
on the occasion of
GURU VIRJANAND NIRVAAN MASS
Venue : Swami Shraddhanand Gurukul, Arya Samaj Souillac.
Date : Tuesday 13th October to 23rd October 2015.
Time : 10.00 a.m. - 12.00 hrs.
POORNAHUTI ON VIJAYA DASHAMEE ON 23rd October 2015 at 10.00 a.m.
Coordinator – Acharya Satish Beetullah Shastree ji Arya – 57639174
Daily lunch will be served.
Eminent personalities will grace the function by their presence.
They hope to be honoured by your kind presence.
Organising Committee

The President and Members
Souillac Arya Samaj & Arya Mahila Samaj
under the aegis of
ARYA SABHA MAURITIUS
in collaboration with
SAVANNE ARYA ZILA PARISHAD
cordially invites you along with your family, friends & Samaj members to attend
PITRI YAJNA : **AN OPEN VED MANTRA CHANTING MAHAYAJNA**
Venue : Souillac Arya Mandir, Swami Shraddhanand Gurukul Souillac.
Date : Sunday 11th October 2015.
Time : 10.00 a.m. to Noon.
Brahma : Acharya Satish Beetullah Shastri ji Arya
Programme : Yajna, Bhajan by Souillac Bhajan Mandali, Sandesh, Shanti path & Sahbhoj.
Pravachan : Acharya Dr Vinod Kumar Sharma ji
Eminent personalities will grace the function by their presence.
Your presence will be highly appreciated.
N.B. *: Please bring your Holy Ved along with you.*
Organising Committee

Vedas and Vedanta, Concepts and Misunderstandings (3)

Prof. Soodursun Jugessur, (Dharma Bhushan, Arya Bhushan)

Resumé of first two parts on this theme :

In the first part we mentioned the distortions that crept in the interpretation of Vedic terminologies because of the lack of knowledge of classical Sanskrit by some preachers, something that laid the basis of popular Hinduism. We then introduced the concepts of Dwaita, Advaita and Vashistadvaita. This last one tried to reconcile the first two diverging views on Brahman. We highlighted Adi Shankara's effort to bring back Brahman after the agnostic influence of Buddhism that had taken Godhood out of India, and the establishment of Brahmanism.

The advent of Brahmanism

This new form of Brahmanism where all is Brahman or a manifestation of the supreme Brahman, was successful in bringing God back to India, and reconverting the Buddhists to Hinduism from south to north of the subcontinent. This explains why the Far East with countries like Burma, Thailand, Indonesia, Sumatra, Cambodia, China and Japan and others still have a significant population of Buddhists, while India, the country of origin of that religion, has very few Buddhists.

However, in reestablishing Godhead in India, Brahmanism later brought in its wake many of the evils of orthodox Hinduism that had been decried by Buddha. With the propagation of Vedanta philosophy at the base, the positive realism, militancy and universal reformist spirit of Vedic faith were sacrificed.

It is said that since the Vedas were quite abstruse, philosophers started explaining the esoteric nature of the hymns, and personal interpretations, influenced by the current beliefs in the period under consideration, came into play. These expositions, many for the laymen, backed by parables, common in the Upanishads, form the roots of Vedanta. **In the Upanishads the human soul is equated to the supreme spirit, the Atman to the Paramatman or the Brahman. This is called Monism.** There is no Dualism, that is, there is no distinction between the *atman* and the Paramatman, and they are considered as one and the same. It is said that the *atman* is only a reflection of the Paramatman. Thus there is only one entity, the Brahman, and all else is only an illusion! By *sadhna* and self-realization, it is claimed that the *atman* merges into the Brahman and becomes one with the Universal spirit. Hence, since everything that exists is only a reflection of the supreme spirit, discriminating between the different entities, it is claimed, is only a weakness of the unrealized limited mind. In this spirit, one should look at all creatures, small and large, with the same eye. This is laudable in theory.

But where distortion comes in is when they claim that there is no such thing as evil as that is only an aspect of the supreme spirit. They say that evil is only a veil that is removed when ignorance is replaced by realization. They view the whole world, as we see it, as only a manifestation of *Maya* or illusion! Here comes the oft-quoted principle of 'Neti-Neti', i.e. not this, not that, a principle that sums up this philosophy of nihilism or negativism. It says: 'It is not this, it is not that!' One is apt to mistake a rope for a snake! What it is can only be realized when the soul realizes that it is one with the supreme soul.

Swami Vivekananda, in trying to reconcile the two schools, gave a new version of Vedanta. He said: 'Monism and Dualism are essentially the same. The differences consist in expression. Dualism is in nature, in manifestation, and Monism is pure spirituality in the essence.' To him, Vedanta covers everything, Dualism or Dwaitism, Qualified Monism, and Advaitism.

In a message to the Youth of India, Swami Vivekananda said: *'The followers of Vashistadvaitic system have as much reverence for the Upanishads as the followers of the Advaita, and the Vashistadvaitists claim as much authority* for the Vedanta as the Advaitist. *So do the Dualists; so does every other sect in India; but the word Vedantist has become somewhat identified in the popular mind with the word Advaitist, and perhaps with some reason, because, although we have the Vedas for our scriptures, we have Smritis and Puranas – subsequent writings- to illustrate the doctrines of the Vedas; these of course have not the same weight as the Vedas. And the law is, that wherever these Puranas and Smritis differ from any part of the Shruti, the Shruti must be followed and the Smriti rejected. Now in the expositions of the great Advaitic philosopher Shankara, and the school founded by him, we find most of the authorities cited are from the Upanishads, very rarely is an authority cited from the Smritis, except, perhaps, to elucidate a point which could hardly be found in the Shrutis. On the other hand, other schools take refuge more and more in the Smritis, and as we go more and more to the Dualistic sects we find a proportionate quantity of the Smritis quoted, which is out of all proportion to what we should expect from a Vedantist par excellence, if I may say so.'*

Coming from the mouth of Swami Vivekananda, the above quotation is very meaningful. Orthodoxy cannot simply ignore it or reject it. But prejudices need to be neglected.

5. Vedanta and Vedic Realism

Let us thus now analyze the pros and cons of this Vedanta philosophy. A human being goes through the different stages of growth, physical and mental, and lives the life of Bramhacharya (student), Grihastha (married life), Vanprastha (re-education after retirement), and finally Sanyasa (renunciation). These four stages of life, Chatur Ashramas, are accepted by all practicing Hindus. During the Sanyasa stage, when one is lost in complete meditation through yoga, one reaches a stage when everything merges into the supreme spirit, and one feels exalted. In that stage, the seekers of transcendental truth, feeling one with the supreme, proclaimed: 'Aham Bramhasmi!', i.e. I am one with the Brahman! This is a stage of blissful joy, a stage of what we call *samadhi*, experienced by a lucky few. In such a stage, one may be justified in proclaiming: 'I am one with the Brahman!' But soon after, when the *samadhi* ceases, and one is brought back to the reality of solid earth, one then views everything with a different perspective, and is bound to have a different view of life and the world around.

We admit this is possible in the exalted state of yoga Samadhi. But from there on, to prescribe this as a generalized philosophy of life is bound to create misunderstanding. To claim that everything around is only illusion, to claim that you are me and I am you, to claim that evil is only another aspect of goodness, are far from palpable realities of life. This can only lead to indifference to life and its ramifications. The duties and tribulations of the Bramhacharya, Grihastha, and Vanprastha cannot, in one sweep, be relegated to the realm of illusion, and be fused with the occasional flights of the soul during samadhi! Each stage of life has its own duties and responsibilities that have to be shouldered with realism, faith and optimism. The moment we start believing that everything is illusion, a manifestation of overpowering Maya, our positive urge to work hard and improve ourselves, our children and the community at large, becomes dampened, and we become weaklings and tend to leave everything to fate. Even if in theory we are the Brahman, we still remain bound by the petty weaknesses of the soul contained in this physical body, with its very many material, spiritual and social needs. 'Roti, kapra, and makaan' still matter. We cannot escape from the demands of reality around.

In our next article we will show how Vedic Realism gives humanity a purpose to live a life of love, sacrifice, duty towards our fellow beings, and the ascent towards Sanyas.

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1,Maharshi Dayanand St., Port Louis,
Tel : 212-2730, 208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी., ओ.एस.के., आर्य रत्न
सह सम्पादक : श्री सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए.,ओ.एस.के,सी.एस.के.,आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम*
Printer : BAHADOOR PRINTING CO. LTD
Ave. St. vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038

Poornahuti of Shravani Yaj at 15 Cantons Arya Samaj

Ravindrasingh Gowd

The kick start of Shravani Mahotsav was given at the Arya Sabha Mauritius on the 1st of August 2015. From then on all the affiliates of Arya Sabha organised various activities to mark the Ved Maas, month of August (Sawan) dedicated to the teaching and listening of the Vedas. In the same line , the 15 Cantons Arya Samaj organised its Poornahuti on Sunday 13th September 2015 amidst an attentive audience from different nearby branches and distinguished Guests. Acharya Vinod Kumar Sharma from India, Dr. Oudaye Narain Gangoo, OSK, Arya Ratna, President of Arya Sabha Mauritius, Shri Ravindrasingh Gowd, President of Plaines Wilhems Arya Zila Parishad and Assistant Secretary of Arya Sabha, Smt Yalini Rughoo-Yallappa, Vice-President of Plaines Wilhems Arya Zila Parishad and Member of Managing Committee of Arya Sabha , Shri Swaroopanand Kinoo, graced the function by their presence.

The Yaj started at 9.30 am and was performed by Pt R. Seeraj, Varisht Pundit of Upper Plaines Wilhems, Pt C. Custneea, Pt. J. Gajadhur who is also President of the Samaj and Pta P. Dookhee. Two chapters of Yajur Veda were also read . After the Yaj, we got the opportunity to listen to three devotional songs by Smt Yalini Rughoo- Yallappa in solo, by members of the Samaj and by Pt. Gajadhur respectively.

In his welcome speech, Shri Gajadhur quoted a verse from Isopanishad. **"Isaa vaasyamidam sarvam yatkincha jagatyaam jagat……".** To substantiate the necessity to take the path of spiritual unity and to keep away from materialism that is causing much harm to many of our fellow beings. There is erosion of our values in search of material gains. He mentioned many rich people who despite having enormous wealth had ended their lives either in jail, asylum, committed suicide or died in miseries, because man devoid of spirituality becomes imprisoned in total darkness. The Vedas are divine treaties that open the path of peace and welfare. Renunciation is an eternal maxim in ethics as well as in spirituality. Before ending his speech, Pt. Gajhadur thanked the Arya Sabha and the Plaines Wilhems Arya Zila Parishad for the financial assistance received for the renovation and new look of the Samaj.

As President of Plaines Wilhems Arya Zila Parishad,I was also invited to address the audience and I had immense pleasure to share my views. Referring to a famous saying, **"When wealth is lost nothing is lost. When health is lost something is lost. When Character is lost ,everything is lost."** Therefore character building is of utmost importance in a child's upbringing to emerge as a responsible and honest citizen. What is happening in the society the World over, character building has become the most crucial need of Man and this will come from the child's upbringing by his three preceptors , Mother, Father and the Guru. The character is but the aggregates of the tendency. We are what our thoughts have made us. Our Vedic Rishis laid much emphasis on the Samskaars and they held that the following three types of Samskaars influence the behavior of the child. Firstly, Samskaar from his past births. Secondly, Samskaars from his parents(Genetically) and thirdly , samskaars from the environment that is behaviours from parents, peer groups. Thus the education of a child is no more than controlling the three Samskaars. Considering the rapid evolution of the civil society, it has become more than necessary to revisit our mode of living. The only way is to go back to the Vedas, follow spiritual path and reject bad company.

Dr. Oudaye Narain Gagoo, President of Arya Sabha and Academic Dean of Rishi Dayanand Institute(RDI) expressed his appreciation to the 15 Canton AS for the well-organized poornahuti of the Shravani Yaj. As a Sanskrit Scholar he beautifully explained in simple terms word by word the meaning of the Agni- Aadhaan Mantra, that is, kindling of fire mantra.

"Om Bhur- Bhuva- Swah.
Om Bhur-bhuvah svardyauriva Bhumna
prithi viva varimna
Tastyaaste pritivi devayajani pristhe'
gnimannaadamannaa dyaayaadadhe"

Om (God) is the Protector,(Bhur), giver of life,(Bhuvah), Remover of pains and sorrows,(Swah)-bestower of happiness.

"The Lord, Vast as the Sky and extending as Earth. O Earth, seat of sacrifice for Nature's bounties, on your back, I place the food consuming fire, so that we may gain food grains".

Dr. Gangoo explained clearly that Yaj is a sacrificial duty which is done for the benefit of whole mankind and other living beings. Whatever oblation(Ahuti) is offered to the fire by the Yajmaan is for benefit of all living beings. The fire transforms all the ingredients (Ghee, Samagri, medicinal herbs) through the heat energy into subtle particles and with the Wind as carrier moves to the atmosphere purifying it. These also help cloud formation that transfom into rain that come back to the surface of the earth necessary for food production and the water cycle. Hence daily performance of Yajna is necessary to keep body, mind and the environmemt conducive for better living.

The Special Guest, Acharya Dr. Vinod Kumar Sharma who is in Mauritius since two months is an Ayurvedic Practitioner but also perform Yaj therapy, Mud therapy, water therapy to cure various diseases and physiological disorders. He pointed that lots of diseases can be cured through Yaj provided specific types of samagri are used. He also mentioned that green plant parts should also be used as they contain essential volatile oils that get evaporated due to the high temperature generated inside the Hawan Kund and are more easily available in gaseous form. He also explained the use of a hawan kund(firepot) made of earth rather than that of metal is beneficial.

The session was a very rich one and appreciated by the audience,

Smt Ghurbhurrun who acted as Master of Ceremonies on that auspicious occasion, thanked the Guests and the audience for their presence and co-operation and invited all for a lunch.

Exhibition Organised at DAV College Morcellement St. Andre

An exhibition was organized on Friday 4th September 2015 by Lower Six Students – Economics on Substance Abuse and their effects on health. The objective of the exhibition was to sensitize students about the negative effects of cigarettes, drugs, alcoholic drinks and also dangerous driving under the influence of alcohol or drugs. The exhibition was also used as a teaching strategy as the students were asked to present what they learned in class. The opening ceremony was performed by the Manager, Rector and Deputy Rector and the exhibition was visited by all the students of the college. A positive feedback was received from them.